Notification No. 560/2024
Date of Award: 14/6/2024

Name of Scholar: Priyanka Kumari
Name of Supervisor: Prof. Neeraj Kumar
Name of Department: Hindi

Topic Of Research: Hindi SANSMARAN SAHITYA MEIN CHITRIT GRAMIN SAMAJ AUR SANSKRITI KA ADHYAYAN

बीज शब्द-
हिन्दी संस्मरण, स्मृति, ग्रामीण समाज, ग्रामीण संस्कृति, परिवेश, सर्जनात्मकता, ग्रामीण भाषा, देहभाषा

FINDING

स्थापनाएँ -

1. अविस्मरणीय स्मृति, आत्मीयता एवं अनुभूति संस्मरण लेखन का मूलाधार है।

2. स्मृति सर्जना के मामले में संस्मरण आत्मकथा शैली की अगली कड़ी है।
3. संस्मरणकार विभिन्न पात्रों के माध्यम से ग्रामीण जीवन का वर्णन करते हुए सामाजिक संरचना तथा सामाजिक अन्तः सम्बन्धों का विश्लेषण करते हैं।

4. संस्मरणों में ग्रामीण समाज के संर्घष और द्वंद्व को रूपायित किया गया है। आज के ग्रामीण समाज के लोग आधुनिक और परंपराबोध से ग्रस्त संक्रमण की स्थिति में हैं।

5. आधुनिकीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण, पश्चिमीकरण, तकनीकीकरण तथा बाजारवाद के बढ़ते प्रभाव से ग्रामीण समाज और संस्कृति के बदलते स्वरूपों को संस्मरणों में दर्शाया गया है। ग्रामीण समाज में ये बदलाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही रूपों में दिखाई देते हैं।
6. विवेच्य संस्मरणों में जो समस्याएँ उठाई गई हैं, वे किसी एक ग्राम की बात न करके समूचे ग्रामीण परिवेश के यथार्थ को उजागर करते हैं।

7. संस्मरणकार स्त्री विमर्श, किसान विमर्श एवं समलैंगिकता जैसे विमर्शात्मक दृष्टि को अपने संस्मरण में स्थान देते हैं। संस्मरणकार ग्रामीण समाज में विविध समस्याओं का यथार्थ चित्रण करते हुए समाज को उन समस्याओं के प्रति सचेत करने का प्रयास भी करते हैं। जीवन और उसके परिवेश को अभिव्यक्त करने वाली सबसे सशक्त एवं प्रमाणिक विधा संस्मरण है।